



श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १

प्रश्न - पत्र

जून-२०१७
गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -

२०

-यानि सुदेव-सुगुरु, सुधर्म में अटूट सच्ची श्रद्धा।
- देह रक्षा एवं..... के लिये श्रीवज्रपंजर स्तोत्र प्रचलित है।
- गीतार्थ की बात न समझे और न स्वीकारे वो.....समान श्रावक है।
- यानि गलत मान्यताये, भ्रामक कल्पनाये।
- वीर प्रभु को वाद में पराजित करने के बाद मैं..... बन जाऊंगा ऐसा इन्द्रभूति ने सोचा।
- परमाधामी देव..... में बसते हैं।
- ज्ञान, दर्शन, चरित्र के पालन करने योग्य आचारो का पालन न करे वो..... कहलाता है।
- चोरस रुचक से १०० योजन उपर और १०० योजन नीचे.....आया है।
- मन, वचन, काया की प्रवृत्ति यानि.....।
- लोक के प्रत्येक विभाग को..... कहा जाता है।
- मोक्षमार्ग..... के राजमहल में से गुजरता है।
- यह पद प्रथम मंगलरूप होता है।
- सर्व क्रियाये यदि..... करने में आये तो पाप का बंध नहीं होता है।
- नामक चौथा अतिचार जानना।
- श्रावक, श्रद्धावंत, विवेकवंत और..... होता है।
- मैं जिनेश्वर प्रभु के..... दर्शन करुंगा।
- सोमिल ब्राह्मण के यहां ग्यारह पंडितों का शिष्य परिवार..... का था।
- मनुष्य का जन्म, मरण..... में ही होता है।
- औदारिक, वैक्रिय, आहारक और तैजस वर्गणा..... परिणामी है।
- आत्मा के गुण को ढंकना, वो कर्म के स्वभाव को..... कहा जाता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१५

- समान प्रदेशों के बने हुए स्कंध समूह क्या कहलाते हैं ?
- इन्द्रभूति गौतम का जन्म कौनसे नक्षत्र में हुआ था ?
- कौनसा क्षेत्र चक्रवर्ती को जीतने योग्य होता है ?
- श्रावक के बारह व्रतों का मूल क्या है ?
- चूहा बिल्ली को क्या करने दौड़ आया है ?
- नवकारमंत्र बाहर की चारों दिशाओं में किसके जैसा है ?
- श्रावक के वार्षिक अवश्य आचरण करने योग्य कर्तव्य का वर्णन किसमें समझाया है ?
- उर्ध्वलोक कौनसे आकार का है ?
- इन्द्रभूति ने भगवान महावीर को कैसे प्राणी के रूप में संबोधित किया है ?
- कहलाता है श्रावक, पर श्रावक योग्य गुण न हो उसे क्या कहा जाता है ?
- साधु-साध्वी का मलीन शरीर देखकर दुर्गच्छा की हो तो वो कौनसा अतिचार है ?
- जैन दर्शन में जगत कैसा कहलाता है ?
- जुम्हिका नगरी में समवसरण में प्रभु की प्रथम देशना के वक्त कौन हाजिर नहीं थे ?
- अन्य देवों की भक्ति करके उन्हें ही मुक्ति देने वाला मानना, यह कौनसा मिथ्यात्व है ?
- आत्मा के अरूपी गुण का आवरण करे वो कौनसा कर्म ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१०

- श्रवन्ति २) दु ३) वप्रोपरि ४) जीएण ५) आसे ६) आयुध ७) चउव्विहा ८) आधि: ९) गोआणि
- सव्वजुं ११) वय १२) भुंजंतो १३) पडाग १४) दंसण १५) सव्वति १६) समायारी १७) कहंचरे
- भाय १९) पयुरु २०) श्रावक माहरत्तमा:

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -

१०

A	B	A	B
१) श्रेणिकराजा	१) बौद्ध दर्शन	६) कांक्षा	६) द्रह
२) मुखवस्त्रिका	२) कर्मग्रंथ	७) कर्मविपाक	७) दर्शन श्रावक
३) वासना	३) अतिचार	८) नाना सरोवर	८) पितांबर
४) कामदेव	४) उत्सूत्र प्ररुपणा	९) अहाछंद	९) मध्यलोक
५) इन्द्रभूति	५) उत्तरगुण श्रावक	१०) ज्योतिष चक्र	१०) सिद्ध भगवान

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -

१०

१. कर्म की उत्तर प्रकृति कितनी ?
२. नवकारमंत्र के कितने पदों के साथ हमारे देह और आत्मा की रक्षा जोड़ने में आयी है ?
३. पुद्गलास्तिकाय के कितने भेद हैं ?
४. भगवान जिस क्षेत्र में विचरण करते हो वहां कितने योजन तक रोग नहीं होते ?
५. सूक्ष्म परिणामी वर्णनाये कितनी ?
६. अदीदीप में कितने अंतरदीप हैं ?
७. इन्द्रभूति गौतम कितने वेद-विद्याओं में पारंगत थे ?
८. उर्ध्वलोक में कितने किल्बिषिक देव हैं ?
९. नामकर्म के कितने भेद हैं ?
१०. श्राद्धविधि ग्रंथ में कितने द्वारों से श्रावक जीवन का रहस्य बताया गया है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ -

१०

१. श्रीवीतराग परमात्मा से अलग अपना मत प्रस्थापित करे वो निहव कहलाता है ।
२. अतिशय अंग की रक्षारूप ऐसे सिद्ध भगवन्त को नमस्कार हो ।
३. कर्मपुद्गल के दलिक का माप वो प्रदेशबंध कहलाता है ।
४. जंबूद्वीप के उतरने के बड़े उतार स्थानों को श्रेणी कहा जाता है ।
५. आठ प्रवचनमाता के धारक ऐसे सुसाधु को शुद्ध गुरुत्व जानना ।
६. वीरप्रभु को केवलज्ञान हुआ तब ८४ इन्द्रों के सिंहासन कंपायमान हुए ।
७. गुरु की देशना बहुमानपूर्वक हृदय में धारण करे वो श्रावक दर्पण समान कहलाते हैं ।
८. जंबूद्वीप के आस-पास वलयाकार में कालोदधि समुद्र है ।
९. तिर्यच, देव, मनुष्य वगैरह सर्व जीवों को पूजने योग्य प्रभु का पूजातिशय है ।
१०. आत्मा के साथ कर्मरूप में जुड़ने में उपयोगी होते पुद्गलों को मनोवर्णना कहा जाता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१०

१. कर्म बांधते वक्त योगानुसार आत्मा कम-ज्यादा कर्मदलिकों के समूह को आत्मा के साथ जोड़ता है ।
२. मूर्खों को कोई बना जाय पर इसने तो दवों को अपनी ओर ललचाया है ।
३. एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती, एक गुफा में दो केसरीसिंह भी नहीं रह सकते ।
४. अपने जीवन की पाप-परंपरा का मूल कारण जयणा की कमी है ।
५. जो प्रमाद वश केवल देह का पोषण करते हैं और संयमीकरण में दुर्बल जैसे हो वो उसन्ना ।
६. विरति यह रथ है तो सम्यक्दर्शन उसका सारथी है ।
७. शुद्ध सम्यक्त्व द्वारा ही आत्मरूपी भूमि निर्मल हो सकती है ।
८. सती स्त्री का एक बार शील खंडित हो तो वो सती नहीं कहलाती है ।
९. पंचपरमेष्ठि के पदों से भय, आधि, व्याधि, मन की पीडा कभी भी होती नहीं है ।
१०. रसशास्त्र के जानकार से कौनसा रस अंजान होता है ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१५

१. लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व । २) स्थानांग सूत्र अनुसार श्रावक के प्रकार । ३) रसबंध ।
४. वर्णनाये कितनी और कौनसी ? इसमें से आहारक और औदारिक वर्णनाये समझाइये ।
५. श्रीव्रजपंजरस्तोत्र की महत्ता ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com